~~PAPER-V~~

SCIENTIFIC MANAGEMENT THEORY

F. W. ~~FREDRICK~~ TAYLOR

Paper-5, Unit-2, M.A. (Pol Sci.) :: Sem-II

प्रश्न :- 3 संगठन के वैज्ञानिक प्रबंध दृष्टिकोणों की विवेचना करें ।

उत्तर :- वैज्ञानिक प्रबन्ध :-

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, औद्योगिक क्रांति परिपक्व अवस्था में पहुँच चुकी थी और व्यवसाय तथा उद्योग के त्वरित विकास के कारण औद्योगिक योजना तथा प्रबन्ध की नयी समस्यायें उभरने लगी थीं । इन समस्याओं के समाधान के हेतु तथा औद्योगिक उत्पादनशीलता को बढ़ाने के लिए टेलर ने वैज्ञानिक प्रबन्ध सम्बन्धी विचार को प्रतिपादित किया । यद्यपि वैज्ञानिक प्रबन्ध शब्द का आविष्कार सर्वप्रथम लुइस डी. ब्रान्डीस के द्वारा किया गया था जिसे टेलर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ' वैज्ञानिक प्रबन्ध के सिद्धांत और पद्धतियाँ में प्रयुक्त किया ।

पेशे से इंजीनियर फ्रेडरिक विन्सलो टेलर ने ही सर्वप्रथम संगठन का व्यवस्थित सिद्धांत प्रस्तुत किया । सबसे पहले, उसी ने औद्योगिक क्षमता तथा मितव्ययिता बढ़ाने के लिए औद्योगिक कार्य के क्षेत्र में वैज्ञानिक पद्धति अपनाने का समर्थन किया । टेलर का मुख्य निष्कर्ष यह है कि प्रबन्ध स्पष्ट रूप से निर्मित ऐसे नियमों और सिद्धांतों पर आधारित है जिसका सभी संगठनों में सार्वजनिक रूप से प्रयोग हो सके और यही बात इसे शुद्ध विज्ञान की कोटि में रख देती है । टेलर के प्रबन्ध सिद्धांत को इस कारण भी वैज्ञानिक माना गया है कि ये औद्योगिक उद्योग की प्रक्रियाओं में परिस्थितियों का पहले परीक्षण तथा पर्यवेक्षण ।

वैज्ञानिक प्रबन्ध का मुख्य लक्ष्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों में वैज्ञानिक पद्धति को क्रमबद्ध रूप में लागू करके औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाना था । इसके लिए टेलर ने अपनी पुस्तक में कुछ मूल परिकल्पनाएँ की है । वे निम्नलिखित हैं -

1. औद्योगिक प्रक्रियाओं पर वैज्ञानिक परीक्षण तथा परीक्षण लागू किया जा सकता है श्रमिकों की कार्य प्रक्रिया को बुनियादी कार्य गतियों से घटा कर प्रत्येक कार्य गति के लिए दीर्घतम, संक्षिप्तम तथा औसत वांछित समय का पता लगाया जा सकता है ।
2. प्रत्येक परिचालन के लिए निर्धारित मानक समय विशेष निर्धारित दक्षता तथा मितव्ययता के मानक से प्राप्त किया जा सकता है ।
3. प्रबन्ध के द्वारा औद्योगिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सर्वोत्तम पद्धतियों से प्रशिक्षण दिया जा सकता है ।

Scanned with CamScanner

इसके अलावा टेलर ने वैज्ञानिक प्रबन्ध के कुछ सिद्धांत भी प्रतिपादित किए । उनका मानना था कि वैज्ञानिक प्रबन्ध कुछ सिद्धांतों पर आधारित है । ये सिद्धांत निम्नलिखित हैं –

1. कार्य पद्धति का मानकीकरण :–

टेलर के अनुसार वैज्ञानिक प्रबन्ध का उद्देश्य औद्योगिक क्षमता तथा मितव्ययता को प्रोत्साहित करना है । इस उद्देश्य की पूर्ति निश्चित समय में किसी उपक्रम द्वारा लिए जाने वाले कार्य की कुल मात्रा का परिणाम तथा काम करने की सुविधाजनक परिस्थितियों को वैज्ञानिक छानबीन एवं दैनिक कार्यभार को निश्चित करेके, जितने कामगार योजनाबद्ध रूप में कार्य करें, प्राप्त किया जा सकता है ।

वैज्ञानिक प्रबन्ध का लक्ष्य अधिकाधिक उत्पादन तथा मितव्ययता की प्राप्ति के लिए प्रबन्ध को अच्छी मजदूरी देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा । यदि वांछित परिस्थितियों में कार्य करते हुए कामगार आदर्श स्तर का कार्य करे तो उसे पुरस्कार मिलना चाहिए और ऐसी परिस्थितियों में भी उत्पादन बढ़ाने में असमर्थ रहे, तो उसे दंडित करना चाहिए । यह कार्य पद्धतियों के मानकीकरण, श्रेष्ठ उपकरण तथा कार्य सुविधाओं एवं सहयोग का समावेश कर ही करना सम्भव हो सकता है और मानकीकरण तथा सहयोग का समावेश कराना प्रबन्ध का कार्य है ।

2. वैज्ञानिक चयन तथा कामगारों का प्रशिक्षण :–

टेलर का दूसरा सिद्धांत कामगारों का चयन, उनको काम पर लगाना तथा उन्हें वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण प्रदान करना है । काम करने की परिस्थितियों के मानकीकरण का तभी सटीक उपयोग हो सकेगा जब कामगारों का चयन करके उन्हें उसी काम पर लगाया जाय जिसके लिए वे शारीरिक और औद्योगिक दोनों दृष्टियों से पूर्णतया सक्षम हैं । इसके अलावा कामगारों को उनके काम में प्रशिक्षित करना तथा उन्हें व्यक्तित्व के विकास के लिए सारी सुविधाएँ प्रदान करना यह भी प्रबन्ध का कर्त्तव्य है ।

3. प्रबन्ध और कामगारों के बीच कार्य का समान विभाजन :–

टेलर का तीसरा सिद्धांत स्पष्टत इस बात का समर्थन करता है कि प्रबन्ध तथा कामगारों के बीच कार्य और उत्तरदायित्व का समान विभाजन होना चाहिए । टेलर ने सुझाव दिया कि कामगारों का बुनियादी कार्य प्रबन्ध को अपने ऊपर

Scanned with CamScanner

ले लेना चाहिए । प्रबन्धकों को योजना, संगठन, नियंत्रण तथा कार्य पद्धति के निर्धारण का काम जिसके लिए वे अधिक उपयुक्त हैं, अपने ही जिम्मे रखना चाहिए ।

कामगारों और प्रबन्ध का आपसी सहयोग :-

टेलर के अनुसार कोई संगठन तभी सुचारू रूप से कार्य कर सकता है जब वहाँ कामगारों तथा प्रबन्ध के बीच सक्रिय तथा सद्भावनापूर्ण सम्बन्ध हो, दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब उनके बीच आपसी तालमेल हो । यह तभी सम्भव है जब दोनों को एक दूसरे पर आस्था तथा विश्वास होगा । संगठन में स्वस्थ और सौहार्दपूर्ण वातावरण पैदा करके दक्षता और उत्पादन अच्छी तरह बढ़ाया जा सकता है और ऐसा वातावरण बनाने में कामगारों और प्रबन्ध दोनों की सम्मिलित जिम्मेदारी है ।

ये चार सिद्धांत जो वैज्ञानिक प्रबन्ध की आधारभूमि है, के कारण औद्योगिक प्रबन्ध के प्रति पूरे दृष्टिकोण में भारी परिवर्तन आया । इसकी बदौलत मानव संसाधन तथा भौतिक संसाधनों की बरबादी कम होने लगी और श्रमिक तथा वस्तुओं का श्रेष्ठ और दक्षतापूर्ण उपयोग होने लगा । इससे कारखानों के कार्य प्रक्रिया का सामंजस्यकरण करने और कार्य सुविधा को बढ़ाने में सहायता मिली । श्रमिकों को पूर्व से अधिक मजदूरी मिलने लगी, उन्हें बढ़िया काम मिला तथा प्रशिक्षण प्राप्त हुआ । काम के घंटे कम हो गये, तथा सामान्य कार्य सुविधाएँ बढ़ गईं । प्रबन्धकों को भी इस वैज्ञानिक प्रबन्ध आन्दोलन से प्रभावी संगठन का विकास करने के लिए प्रभावी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । इसके अलावा टेलर ही ऐसे प्रबन्ध चिंतक हुए जिन्होंने अनुसंधान, मानदण्ड योजना, नियंत्रण तथा श्रमिक और प्रबन्ध के बीच आपसी सहयोग जैसे प्रबन्ध के ये पाँच आधार स्तम्भ प्रदान किए और उन्हें उपयोग में लाने पर बल दिया । ये ही पाँच सिद्धांत आज प्रत्येक सफल संगठन की आधारशिला बन गए हैं ।

बीसवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में वैज्ञानिक प्रबन्ध सिद्धांत ने संयुक्त राज्य अमरीका में प्रशासनिक विचारों तथा पद्धतियों पर बहुत प्रभाव डाला । इसने केवल औद्योगिक उद्यमों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को ही नहीं बल्कि सरकारी संगठनों को भी प्रभावित किया । सन् 1910 में इसी वैज्ञानिक प्रबन्ध आन्दोलन के कारण राष्ट्रपति टैफ्ट के अधीन अर्थव्यवस्था और दक्षता आयोग गठित किया गया । इस आयोग की सिफारिशों ने वैज्ञानिक प्रबन्ध आन्दोलन को और लोकप्रिय बनाया । इस वैज्ञानिक प्रबन्ध आन्दोलन की लोक प्रियता तथा प्रभाव को इस बात से भी आंका

Scanned with CamScanner

जा सकता है कि सोवियत संघ के औद्योगिक प्रबन्ध में भी इसने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया । लेनिन ने सन् 1920 में ही रूस के औद्योगिक प्रबन्धकों को उत्पादन बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक प्रबन्ध अपनाने पर जोर दिया । बीसवीं सदी के तीसरे और चौथे दशक के दौरान सोवियत उद्योगों में उत्पादनशीलता और दक्षता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक प्रबन्ध के द्वारा जबरदस्त प्रयत्न किये जाते रहे हैं ।

आलोचना :→ लेकिन इतना सब होने के बावजूद भी वैज्ञानिक आन्दोलन आलोचना से परे नहीं है । इसे संदेह की दृष्टि से देखा गया । यह आरोप लगाया गया कि यह आन्दोलन मुख्यतः संगठनात्मक दक्षताओं को मशीनी तरीके से बढ़ाने में लगा रहता है । श्रमिकों ने टेलरवाद का ऐसा विरोध किया कि संयुक्त राज्य अमरीका के औद्योगिक सम्बन्ध आयोग की ओर से प्रो. रावर्ट होक्सी को जाँच करने को कहा गया । होक्सी ने इसकी जो आलोचना की उसमें मुख्य यह है कि वैज्ञानिक प्रबन्ध के प्रधान आदर्श और श्रमिक संघवाद एक दूसरे से मेल नहीं खा सकते । वैज्ञानिक प्रबन्ध का मुख्य लक्ष्य [illegible] दक्षता और प्रबन्ध सम्बन्धी समस्यायें हैं, यह कामगारों के मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक समस्याओं के पास तक नहीं फटकता । इसमें एक ही तरह का नीरस काम, अनिश्चितता, बेकारी आदि बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता ।

प्रबन्ध चिंतक सैम लेविसोम तथा ओलिवर शैल्डन दोनों ने भी टेलर के सिद्धांत के कई पहलुओं पर आलोचना की है । शैल्डन प्रबन्ध समस्याओं में मानवीय पक्षों पर बल देना चाहते हैं । लेविसोम संगठन में अच्छे मानवीय सम्बन्धों को कायम रखने पर जोर देते हैं । लेविसोम के शब्दों में कामगार अन्य बातों से अधिक न्याय, पदवी और अवसर का भूखा होता है और केवल मजदूरी बढ़ा देने से दक्षता में अपने आप वृद्धि नहीं होती है ।

टेलर पर इस आरोप के कारण, कि उसने प्रबन्ध के मानवीय तत्वों की अवहेलना की है, अनेक मनोवैज्ञानिक तथा समाज वैज्ञानिक अध्ययन किये गये हैं । उद्योग में समूह की गति तथा मानव सम्बन्ध पर होथोर्न परीक्षण और दूसरे विश्व युद्ध के बाद हुए अनुसंधानों से यह बात सिद्ध करने में बहुत सहायता मिली कि कामगारों के व्यवहार की व्याख्या करने में तथा संगठन के उत्पादन तथा दक्षता का निर्धारण करने में मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक तत्वों का बहुत अधिक हाथ होता है ।

CONCLUSION :→ फिर भी इन आलोचनाओं की वजह से वैज्ञानिक प्रबन्ध के सिद्धांत का महत्व कम नहीं हो पाता । वैज्ञानिक पद्धतियों को लागू करके प्रबन्ध विज्ञान का विकास किया गया है, यह इसकी अच्छी खूबी है । यह भी जानना आवश्यक है कि टेलर के सिद्धांतों में संगठन के मानव सम्बन्ध पक्ष पर कम जोर दिया गया है परंतु उसकी सम्पूर्ण उपेक्षा नहीं की गई है । टेलर ने कामगारों और प्रबन्धकों के आपसी सहयोग को औद्योगिक क्षमता बढ़ाने के लिए अनिवार्य सिद्धांत मान कर इसका महत्व स्वीकार किया है ।

Scanned with CamScanner